भजन

तर्ज–सूरज कब दूर गगन से

जब मेहर पिया करते हैं, आत्म निर्मल करते हैं
जब मेहर धनी करते हैं, तो दिल को अर्श करते हैं
ये सागर तो...मेहर का सागर है
निसवत का यह सागर है

1–दुःख से पिऊ जी मिलसी,सुखें न मिल्या कोए
अपने धनी का मिलना,सो दुःख ही से होए
दुःख ने ही विरह जगाया,विरह ने इश्क उपजाया
तेरी मेहर से ही हमने,है अखण्ड सुख ये पाया

2– है मूलमिलावा अति सुन्दर, जहाँ बैठी मेरी परआत्म
सुन्दर सिहांसन राजस्यामा जी, की शोभा कितनी अनुपम
जुत्थ चालिस में बैठीं हैं,पिया संग तेरे रहती हैं
इस माया ने हमें भुलाया,तेरी मेहर ने जगाया

3– श्री महामति कहे ए मोमिनों, ए मेहर बड़ा सागर
सो मेहर हक कदमों तले, पियो अमीरस हक नजर
पिया दूर नहीं रूहों से,रूहें नहीं दूर पिया से
हक चरणों तले वैठी हैं,हुई मेहर हम सबन पे